REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2018

कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों का व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन।

तेजराम नायक
सहायक प्राध्यापक,
जानकी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, धनुहारडेरा – रायगढ़, जिला – रायगढ़ (छ.ग.)

सारांश

कामकाजी माताओं के बच्चों को अनेक ऐसी परिस्थितिया जिस समय माता का साथ होना आवश्यक होता है ऐसे समय में कभी कभी माताएं अपने कार्यक्षेत्र में होती है अतः इस समय बालक स्वयं ऐसी परिस्थितियों को सामना करना पड़ता है। जिससे उनमें समायोजन की क्षमता आती है। इनके बच्चों में व्यवसायिक आकांक्षा स्तर उच्च होता है। क्योंकी यह बचपन से माता पिता को अपने कार्य एवं व्यवसाय में लगे हुए देखते है। तो बच्चों में भी माता–पिता के व्यवसायिक आकांक्षा का प्रभाव पड़ता है। जैसे बच्चों के ऊपर अभाभवकों का दबाव व्यवसायिक रूची वो प्रति अभिक रहता है। जो की व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर आधारित होता है। गैर कामकाजी महिलाएं अपने बच्चों को ज्यादा समय दे पाती है। आर उनका ज्यादा ख्याल स्खती है। लेकिन जो कामकाजी महिलाएं है. वे अपनी बच्चों को ज्यादा समय नहीं दे पाती है क्या वे अपने बच्चों का पालन–पोषण सही ढंग से नहीं करती है? क्या वो उनको संस्कारों से नहीं सजा पाती है कामकाजी और गैरकामकाजी माताओं की उपलब्धि पर क्या असर पड़ता है? क्या दोनों अवस्थाओं में बच्चों का सर्वांगीण विकास हो पाता है। हमारे देश में ज्यादातर महिलाएं कामकाजी हो गयी है। इसलिए शोधकर्ता ने उनके बच्चों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन किया।

कीवर्ड – कामकाजी माताएं, गैर कामकाजी माताएं, आकांक्षा रतर, व्यवसायिक आकांक्षा रतर

प्रस्तावना :–

आज नारी सभी क्षेत्रों में पदार्पण कर चुकी है। एक महान नेता, समाज सेविका, चिकिलाक, वकीन, अध्यापिका, मंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपती, आदि महान पदों पर कुशलता पूर्वक कार्य करके अपनी अदभुत क्षमता को दिखा रही है। महत्वपूर्ण बात यह है. की व इन पदों की कठनाईयों का सामना करते हुए भी अपनी प्रतिमा का परिचय देती है। शिक्षित नारी में आत्मनिर्भरता का गुण उत्पन्न होता है। आज महिला शिक्षित होकर अपने पैरों में खड़ी हो गयी है।

लेकिन आज वे महिलाएं जो माता और कामकाजी है. ऐसे स्थिती में उनके बच्चों पर उनके कामकाज का क्या प्रभाव पड़ता है? कहां जाता है कि महिला घर को जितना सुव्यवस्थित एवं सुसज्जित रख सकती है, उतना पुरुष नहीं। एक महिला बच्चों का पालन पोषण जितनी जिम्मेदारी एवं कर्तव्य निष्ठा से करती है। उतना पुरुष नहीं। कामकाजी होने के नाते महिलाए अनेक परिस्थीतियों से होकर गुजरती है। वे अधिकांश समय कार्यालय में गुजारती है फिर घर में आकर वे बच्चों को संस्कारो से सजाती है।

कामकाजी माताएं–

कामकाजी गाताओं के अंतर्गत वो सभी गातीए आती है, जो घर का काम करने के साथ–साथ किसी अन्य व्यवसाय से जुड़ी होती है। इसके लिए कुछ निर्धारित समय व्यवसाय के क्षेत्र ऐसी माताओं लगाती है। जिसमें उनको आर्थिक लाभ मिलता है। कामकाजी मांताओं की संज्ञा दी जाती है।

गैर कामकाजी माताएं–

गैर कामकाजी माताओं के अंतर्गत वे सभी माताएं आती है, जो केवल घर का काम करती है। किसी अन्य व्यवसाय से जुड़ी नहीं रहती है। अर्थोपार्जन नहीं करती है, गैर कामकाजी ऐसी माताओं को संज्ञा दी जाती है। व्यवसायिक क्षेत्र से सबंध नहीं होता है।

आकांक्षा रतर–

किसी लक्ष्य या मूल्य आदि को प्राप्त करने की इच्छा आकांक्षा कहलाती है तथा इन लक्ष्यों और मूल्यों के प्रति व्यक्ति की इथम की तीव्रता को आकांक्षा स्तर कहते है। आकांक्षा स्तर से व्य के तात्कालिक लक्ष्य का संकेत मिलता है जिसे एक वयक्ति प्राप्त करने के लिए प्रयास करता है

"आकांक्षा स्तर वह सम्भावित लक्ष्य है जो एक व्यक्ति स्वयं अपने कार्य निष्पादन के समय निश्चित करता है।" आइजनेक

व्यवसायिक आकांक्षा स्तर

बच्चे के व्यवसायिक आकांक्षा के लिए उसके माता पिता का योगदान महत्वपूर्ण रहता है। वह यह चाहते है कि उनका बच्चा जीवन में सफल हो और एक अच्छे व्यवसाय में लग जाये। हर माता पिता यही चाहते है। वह बच्चे को बचपन से ही उस दिशा में चलने के लिए प्रेरित करते है और ससका मार्गदर्शन करते है। माता पिता के ओत्साहन एवं अपनी आकांक्षा से बच्चा आगे बढ़ते जाता है। परंतु कुछ बच्चों के साथ ऐसा भी होता है कि वह अपनी आकांक्षा की प्राप्ति नहीं कर सकते। इसके लिए कुछ परिस्थितियां उत्तरदागी होती है जैसे कि उन बच्चों को उत्तम साधन एवं चुविधाएं नहीं मिल पाती है। जो उनके विकास के लिए आवश्यक होती है। जैसे कि माता पिता का अशिक्षित होना गरिबी समय का अभाव आदि कुछ ऐसे कारण है जिनके कारण कुछ बच्चे पिछे रह जाते है। आज के समय में माता एवं पिता दोनों ही कार्य करते है। ऐसी स्थिति में यह अपने बच्चों के साथ कैसे समायोजन करते है। और उनकी व्यवसायिक आकांक्षा का कहां तक ध्यान रखते है।

शोधार्थी ने अपने शोध में समाज के वर्ग पहला कामकाजी माताओं और दूसरा गैरकामकाजी माताओं के बच्चों का व्यवसायिक आकांक्षा स्तर के अध्ययन का प्रयास किया है।

समस्या कथन:-

कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों का व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य:–

1. कामकाजी एवं गैर कामकाजी मांताओं के बच्चों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
2. कामकाजी एवं गैर कामकाजी मांताओं के बालको के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
3. कामकाजी एवं गैर कामकाजी मांताओं के बालिकाओं के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं:-

H_1 कामकाजी एवं गैर कामकाजी मांताओं के बच्चों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

H_2 कामकाजी एवं गैर कामकाजी गांलाओं के बालको के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

H_3 कामकाजी एवं गैर कामकाजी मांताओं के बालिकाओं के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

शोध उपकरण – प्रस्तुत शोध अध्ययन में व्यवसायिक आकांक्षा स्तर के मापन के लिए Occupational Aspiration scale जी की Dr- J-S- Grewal द्वारा निर्मित है। उपयोग किया गया है।

चर – स्वतंत्र चर – कामकाजी माताओं, गैर कामकाजी माताओं आश्रित चर – व्यवसायिक आकांक्षा स्तर

शोध विधि – प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णन विधि पर आधारित है।

न्यादर्श :- प्रस्तुत शोध अध्ययन में रायगढ़ जिला के कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों को समग्र के रूप से लिया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा न्यादर्ष का चयन–8 शालाओं से किया गया है। जिनमें कुल 75 बालक और 75 बालिका लिये गए है। अर्थात् कुल 150 बालक, बालिकाओं का चयन किया गया है।

परिकल्पनाओं की सार्थकता की जांच

परिकल्पना H_1 – कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर नहीं होगा ।

तालिका क्रमांक – 01

तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	M1~M2	प्रमाणिकता	CR मुल्य	सार्थक असार्थक	परिणाम
कामकाजी माताओं के बच्चे	75	56.57	M1>M2	9.22	0.01	असार्थक	परिकल्पना वीकृत
गैर कामकाजी माताओं के बच्चे	75	56.43		8.94			

1. 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान = 1.98
2. 0.01 सार्थकता स्तर पर तालिका मान = 2.63

विश्लेषण – उपरोक्त सारणी क्रमांक 4.03 के अनुसार तुलनात्मक समूह के रूप में प्रथम तुलनात्मक समुह कामकाजी माताओं के बच्चों की संख्या 75 एवं द्वितीय तुलनात्मक समूह गैर कामकाजी माताओं के बच्चों की संख्या 75 कुल 150 बच्चें लिये गए है जिनमें प्रथम समूह का मध्यमान 56.57 एवं प्रमाणिकता 9.22 है। तथा द्वितीय समूह का मध्यमान 56.43 एवं प्रमाणिकता 8.94 एवं सार्थकता के परीक्षण के लिए CR की गणना की गयी, जिसकी गणना से प्राप्त मान 0.01 प्राप्त हुआ, df = 148 कि के लिए 0.05 स्तर पर 1.98 एवं 0.01 स्तर पर 2.63 उस मान से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत हुई।

परिणाम :- परिकल्पना Ho_1 स्वीकृत ।

व्याख्या :- कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बच्चों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष :- कामकाजी एवं गैरकामकाजी माताओं के बच्चों के व्यवसायिक आंकाक्षा स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना H_2 – कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बालकों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्रमांक – 02

तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	M1~M2	प्रमाणिकता	CR मुल्य	सार्थक असार्थक	परिणाम
कामकाजी माताओं के बच्चे	39	59.67	M1>M2	7.36	1-41	असार्थक	परिकल्पना स्वीकृत
गैर कामकाजी माताओं के बच्चे	36	57.21		9.92			

1. 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान = 1.99
2. 0.01 सार्थकता स्तर पर तालिका मान = 2.64

विश्लेषण :- उपरोक्त सारणी के अनुसार तुलनात्मक समूह के रूप में प्रथम तुलनात्मक समुह कामकाजी माताओं के बच्चों की संख्या 39 एवं द्वितीय तुलनात्मक समूह गैर कामकाजी माताओं के बच्चों की संख्या 36 कुल 75 बच्चे लिये गए है जिनमें प्रथम समूह का मध्यमान 59.67 एवं प्रमाणिकता 7.36 है। तथा द्वितीय समूह का मध्यमान 57.21 एवं प्रमाणिकता 9.92 एवं सार्थकता के परिक्षण के लिए बत की गणना की गयी, जिसकी गणना से प्राप्त मान 1.41 प्राप्त हुआ, df = 72 कि के लिए 0.05 स्तर पर 1.99 एवं 0.01 स्तर पर 2.64 उस मान से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत हुई।

परिणाम :-परिकल्पना Ho_2 स्वीकृत ।

व्याख्या :- कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बालकों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष :- कामकाजी एवं गैरकामकाजी माताओं के बालकों के व्यवसायिक आंकाक्षा स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना H_3 – कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बालिकाओं के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्रमांक – 03

तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	M1~M2	प्रमाणिकता	CR मुल्य	सार्थक असार्थक	परिणाम
कामकाजी माताओं के बच्चे	32	56.25	M1>M2	8.9	0.06	असार्थक	परिकल्पना वीकृत
गैर कामकाजी माताओं के बच्चे	36	56.38		7.36			

1. 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान = 2.00
2. 0.01 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 2.65

विश्लेषण :- उपरोक्त सारणी क्रमांक 4.09 के अनुसार तुलनात्मक समूह के रूप में प्रथम तुलनात्मक समुह कामकाजी माताओं के बालिकाओं की संख्या 32 एवं द्वितीय तुलनात्मक समूह गैर कामकाजी माताओं के बालिकाओं की संख्या 36 कुल 68 बच्चें लिये गए है जिनमें प्रथम समूह का मध्यमान 56.25 एवं प्रमाणिकता 8.9

है। तथा द्वितीय समूह का मध्यमान 56.38 एवं प्रमाणिकता 7.36 एवं सार्थकता के परिक्षण के लिए CR की गणना की गयी, जिसकी गणना से प्राप्त मान 0.06 प्राप्त हुआ, df = 66 कि के लिए 0.05 स्तर पर 2.00 एवं 0. 01 स्तर पर 2.65 उस मान से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत हुई।

परिणाम :- परिकल्पना Ho_3 स्वीकृत ।

व्याख्या :- कामकाजी एवं गैर कामकाजी माताओं के बालिकाओं के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष :- कामकाजी एवं गैरकामकाजी माताओं के बालिकाओं के व्यवसायिक आंकाक्षा स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन के निष्कर्ष

H1 कामकाजी एवं गैर कामकाजी मांताओं के बच्चों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

निष्कर्ष :- दोनों समूहों के माताओं द्वारा बच्चों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में अंतर नहीं पाया गया।

H2 कामकाजी एवं गैर कामकाजी मांताओं के बालको के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

निष्कर्षः दोनों समूहों के माताओं द्वारा बालकों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में अंतर नहीं पाया गया।

H3 कामकाजी एवं गैर कामकाजी मांताओं के बालिकाओं के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

निष्कर्ष :- दोनों समूहों के माताओं द्वारा बालिकाओं के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में अंतर नहीं पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ – प्रस्तुत शोध का शैक्षिक महत्व बालकों की उपलब्धि में वृद्धि का होना उनकी माताओं पर निर्भर करता है। सामान्यतः माना जाता है कि यदि माताएं कामकाजी होतो वह आधुनिक होने के साथ साथ घर के प्रति लापरवाह होती है। जब कि यह आवश्यक नहीं है। कभी–कभी गैरकामकाजी माताएं भी अपने कार्य से उन्मुक्त हो सकते है अतः माताओं के दृष्टिकोण में बदलाव लाना आवष्यक है। जिसका आधार शिक्षा है। जब बच्चों को अभिभावकों का पूर्ण सहयोग एवं समर्थन मिलता है। तब उनका समायोजन भी अच्छा होता है। और परिणाम स्वरूप बच्चों के उपलब्धि स्तर एवं आत्मविष्वास में वृद्धि होगी जिससे वह अपने भविष्य के प्रति जागरूक होंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भटनागर डॉ. आर. पी. एवं डॉ. ए.पी., डॉ. (श्रीमती मीनाक्षी 1997)– 'शिक्षा अनुसंधान विधि एवं विश्लेषण मेरठ – रायल बुक डिपो पृष्ठ.395.396.
2. भटनागर सुरेश (2005)– शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का विकास आर. लाल बुक डिपो मेरठ.
3. गैरेट हेनरी ई. (1966)– स्टेटिक्स इन एजुकेशनल साइकोलाजी कल्याणी पब्लिकेशन पृ. 458से 462.
4. गोस्वामी के (1987)– स्टडी ऑफ द प्राब्लम आफ वक्रिग मदरस एण्ड देयर इम्पैक्ट आन देयर प्री स्कूल चिल्ड्रन विथ स्पेशल टू द सिटी ऑफ द गोहाटी, पी.एच.डी. एजु. ए.यू.चतुर्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च वाल्यूम 1 एन.सी.ई.आर. टी. 1983–1988 पृ. –150.
5. होता सुजाता (1990) वक्रिग वुमन परसेप्सन ऑफ देयर एण्ड इनवायरमेंट इन रिलेषन टू जॉब एण्ड लाईफ सर्टिसफैक्सन पी.एच.डी. डी. एजु. कुक्षेत्र यूनिवर्सिटी फिक्स सर्वे आफ एजुकेशनल रिसर्च वाल्युम 1 एन.ई. आर.टी. 1988–92 पृ. 1704.
6. जौहरी एवं पाठक (2006)– भारतीय शिक्षा का इतिहास आगरा –2 विनोद पुस्तक मंदिर पृ. 303 से 308.
7. कपिल डॉ.एच. के. (1996)– अनुसंधान विधियां हर प्रसाद भार्गव प्रकाश आगरा पृ. 218 से 221.
8. सिंह वी. (1987) सटिसफैक्सन फैमिली अडजस्टमेंट ओक्यूपेशनल एण्ड पर्सनल प्राब्लम आफ वक्रिग इनडिफरेट प्रोफेषन पी.एच.डी. एम. सूख, चतुर्थ सर्व ऑफ एजुकेशनल रिसर्च वाल्यूम–1 पृ. 205. फिक्स सर्वे आफ एजुकेशनल रिसर्च वाल्यूम 2 एन.सी.ई.आर.टी. 1988–92 पृ. 1729.

9. शर्मा आर.ए. (1986) ए काम्प्रेटिव स्टडी आफ द चिल्ड्रन ऑफ द वक्रिग एण्ड नान वक्रिग मदरस पी.एच.डी. एम. सूख, चतुर्थ सर्व ऑफ एजुकेशनल रिसर्च वाल्यूम –1. एन.सी.ई.आर.टी. 1983–1988 पृ. 199
10. टावरी एस. के. (1986)– सम साइकोलोजिकल एण्ड नान साइकोलाजिकल फैक्टरस चिल्ड्रन आफ वक्रिग एण्ड नान वक्रिग मदरस पी.एच.डी. लेक्चरर चतुर्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च वल्यूम 1 एन.सी.ई.आर.टी. 1983–1988 पृ. 208